

Prokerala.

YEAR GUIDE 2025 VARSHPHAL

KAREN LAURET

February 17, 1990, 10:00 AM

Kottayam

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥



जन्म विवरण

नाम	KAREN LAURET
जन्म तिथि	17 February, 1990
जन्म का समय	10:00 am
जन्म तारीख	शनिवार
दिन/रात	दिन
जन्म स्थान	Kottayam
अक्षांश एवं देशांतर	9.58692, 76.5213
समय क्षेत्र सुधार	स्टैंडर्ड टाइम(+05:30)
अयनांश	लाहिड़ी
जेंडर (लिंग)	पुरुष

वर्ष 1990, 17 फरवरी, शनिवार को उत्तरायण के समय, सूर्योदय के पश्चात 10:00 AM बजे 8 घटी (नाझिका) और 4 विघटी (विनाझिका) पर, सप्तमी तिथि, बव करण, ध्रुव नित्य योग, विशाखा नक्षत्र के तीसरे पद में, मेष लग्न, कुम्भ सूर्य राशि और तुला चन्द्र राशि में इस लड़का का जन्म हुआ।

नक्षत्र



विशाखा
पद : 3

चंद्र राशि



तुला
लिब्रा

सूर्य राशि

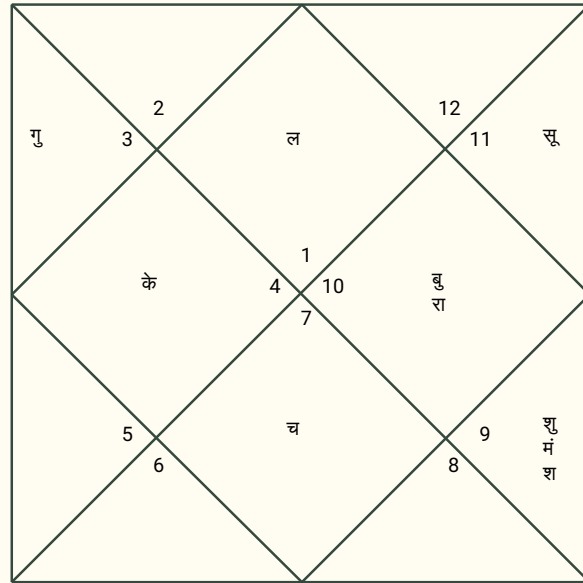


कुम्भ
एक्वेरियस

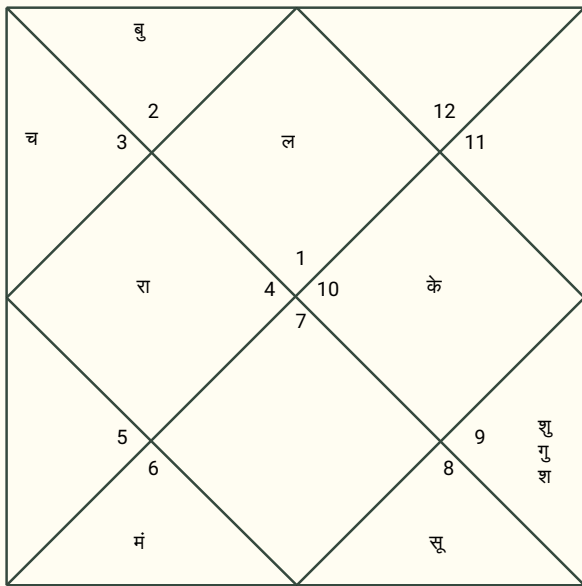
आपकी कुंडली

नीचे उत्तर भारतीय शैली में KAREN LAURET के लिए लग्न, नवमांश और चंद्रमा चार्ट दिए गए हैं।

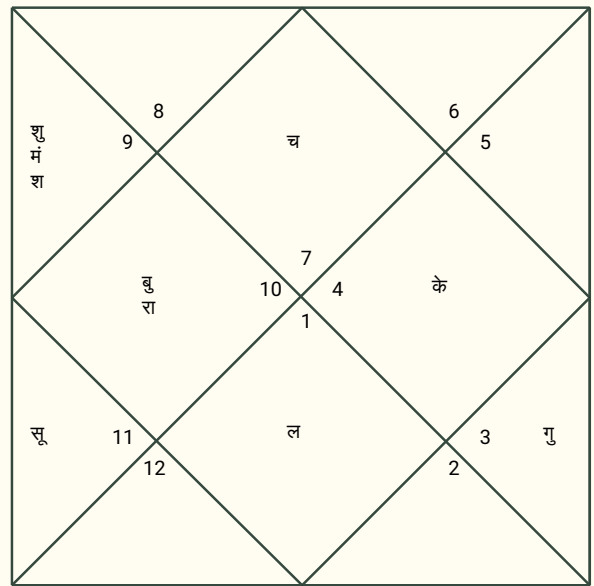
लग्न चार्ट



नवमांश चार्ट



चंद्र चार्ट



वैदिक ग्रह स्थिति (साइडरियल)

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की स्थिति का निर्धारण निरयन रेखांश पर निर्भर करता है, जहाँ "निर-अयन" का अर्थ है कोई गति नहीं। यहाँ, अयनांश, गतिमान वसंत विषुव और सटीक नक्षत्र शून्य मेष बिंदु के बीच सटीक डिग्री अंतर, पश्चिमी ज्योतिष में उपयोग किए जाने वाले सायन रेखांश से घटाया जाता है। अयनांश की गणना के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रथाओं में से, यहाँ उपयोग की जाने वाली विधि चित्रपक्ष है।

चित्रपक्ष लाहिड़ी : 23° 43' 9"

नीचे दी गई तालिका दर्ज की गई तिथि, समय, और स्थान पर ग्रहों की स्थिति दर्शाती है (ग्रहों की निरयन देशांतर)

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
रवि	304° 31' 34"	4° 31' 34"	कुम्भ	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	208° 2' 28"	28° 2' 28"	तुला	शुक्र	पूर्वभाद्रपदा	गुरु
बुध	283° 28' 10"	13° 28' 10"	मकर	शनि	श्रवण	चंद्र
शुक्र	268° 40' 59"	28° 40' 59"	धनुष	गुरु	शतभिषा	रवि
मंगल	259° 45' 42"	19° 45' 42"	धनुष	गुरु	रोहिणी	शुक्र
गुरु R	67° 11' 8"	7° 11' 8"	मिथुन	बुध	चित्ता	राहु
शनि	267° 14' 53"	27° 14' 53"	धनुष	गुरु	शतभिषा	रवि
लग्न	0° 36' 24"	0° 36' 24"	मेष	मंगल	अनुराधा	केतु
राहु R	292° 14' 37"	22° 14' 37"	मकर	शनि	श्रवण	चंद्र
केतु R	112° 14' 37"	22° 14' 37"	कर्क	चंद्र	ज्येष्ठा	बुध

R वक्री को दर्शाता है

नीचे दी गई तालिका राशि चक्र में ग्रहों की स्थिति को उनके पश्चिमी नामों के साथ दर्शाती है।

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	परभु	नक्षत्र	परभु
सूर्य	304° 31' 34"	4° 31' 34"	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	208° 2' 28"	28° 2' 28"	लिब्रा	शुक्र	पूर्वभाद्रपदा	गुरु
बुध	283° 28' 10"	13° 28' 10"	कैप्रीकॉर्न	शनि	श्रवण	चंद्र
शुक्र	268° 40' 59"	28° 40' 59"	सैजिटेरियस	गुरु	शतभिषा	सूर्य
मंगल	259° 45' 42"	19° 45' 42"	सैजिटेरियस	गुरु	रोहिणी	शुक्र
गुरु R	67° 11' 8"	7° 11' 8"	जेमिनी	बुध	चित्ता	राहु
शनि	267° 14' 53"	27° 14' 53"	सैजिटेरियस	गुरु	शतभिषा	सूर्य
लग्न	0° 36' 24"	0° 36' 24"	एरीज़	मंगल	अनुराधा	केतु
राहु R	292° 14' 37"	22° 14' 37"	कैप्रीकॉर्न	शनि	श्रवण	चंद्र
केतु R	112° 14' 37"	22° 14' 37"	कैंसर	चंद्र	ज्येष्ठा	बुध

R वक्री को दर्शाता है

वर्षप्रवेश

वर्षप्रवेश किसी व्यक्ति के नए ज्योतिषीय वर्ष की शुरुआत को इंगित करता है। यह तब होता है जब गोचर में सूर्य उस व्यक्ति की जन्म कुंडली में स्थित अपने मूल स्थान पर पहुंचता है।

उन्नत आयु: 35



मुंथा: कुम्भ

तारीख: 18 February, 2024

समय: 03:17:01 AM

उन्नत आयु: 36



मुंथा: मीन

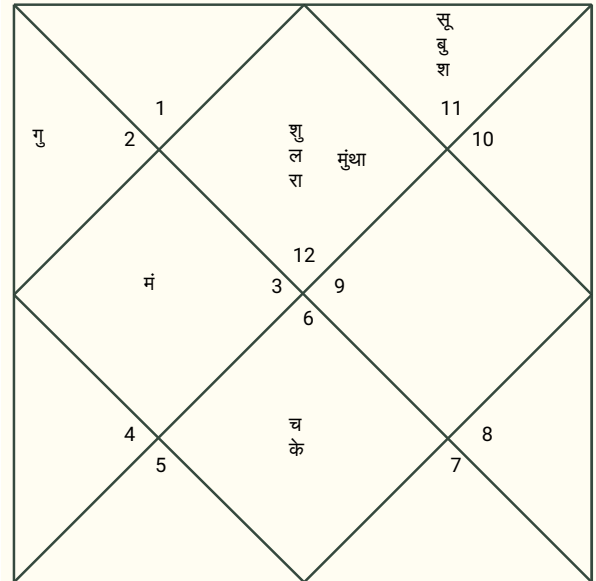
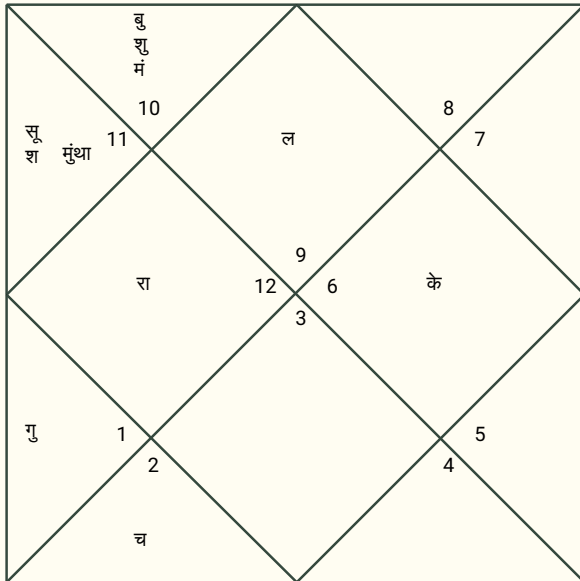
तारीख: 17 February, 2025

समय: 09:30:07 AM

वर्ष 2025 का वर्षप्रवेश February 17, 2025 को 09:30:07 AM पर होता है, जो जन्म के बाद आपके 36th वर्ष की शुरुआत को दर्शाता है। अगले वर्षप्रवेश तक मुंथा की स्थिति मीन राशि में रहेगी।

पिछले वर्ष, 35th वर्ष का वर्षप्रवेश February 18, 2024 को 03:17:01 AM पर हुआ था, जिसमें कुम्भ राशि मुंथा था।

नीचे आपके 35th वर्ष के लिए वर्षप्रवेश समय के आधार पर वार्षिक कुंडली दिया गया है।



वार्षिक ग्रह स्थिति

नीचे 35th और 36th के वार्षिक कुंडली के लिए निरयण देशांतर या ग्रहों की स्थिति अयनांश चित्रपक्ष लाहिड़ी के साथ दी गई है: 23° 43' 9".

निरयण ग्रह स्थिति 35th वर्ष के लिए

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	परभु	नक्षत्र	परभु
सूर्य	304° 31' 34"	4° 31' 34"	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	50° 3' 30"	20° 3' 30"	टॉरस	शुक्र	अश्विनी	चंद्र
बुध	296° 21' 17"	26° 21' 17"	कैप्रीकॉर्न	शनि	स्वाति	मंगल
शुक्र	277° 20' 10"	7° 20' 10"	कैप्रीकॉर्न	शनि	शतभिषा	सूर्य
मंगल	279° 23' 6"	9° 23' 6"	कैप्रीकॉर्न	शनि	शतभिषा	सूर्य
गुरु	15° 12' 7"	15° 12' 7"	एरीज़	मंगल	आद्रा	शुक्र
शनि	314° 14' 46"	14° 14' 46"	एक्वेरियस	शनि	उत्तराषाढ़ा	राहु
लग्न	251° 45'	11° 45'	सैजिटेरियस	गुरु	रेवती	केतु
राहु R	354° 8' 46"	24° 8' 46"	पाइसीज़	गुरु	विशाखा	बुध
केतु R	174° 8' 46"	24° 8' 46"	वर्गो	बुध	पुनर्वसु	मंगल

R वक्री को दर्शाता है

निरयण ग्रह स्थिति 36th वर्ष के लिए

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	परभु	नक्षत्र	परभु
सूर्य	304° 31' 34"	4° 31' 34"	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	175° 47' 27"	25° 47' 27"	वर्गो	बुध	पुनर्वसु	मंगल
बुध	310° 41' 38"	10° 41' 38"	एक्वेरियस	शनि	उत्तराषाढ़ा	राहु
शुक्र	343° 34' 7"	13° 34' 7"	पाइसीज़	गुरु	उत्तर फाल्गुनी	शनि
मंगल R	83° 6' 38"	23° 6' 38"	जेमिनी	बुध	धनिष्ठा	गुरु
गुरु	47° 20' 38"	17° 20' 38"	टॉरस	शुक्र	अश्विनी	चंद्र
शनि	325° 3' 17"	25° 3' 17"	एक्वेरियस	शनि	उत्तरभाद्रपदा	गुरु
लग्न	352° 6' 8"	22° 6' 8"	पाइसीज़	गुरु	विशाखा	बुध
राहु R	334° 47' 30"	4° 47' 30"	पाइसीज़	गुरु	उत्तर फाल्गुनी	शनि
केतु R	154° 47' 30"	4° 47' 30"	वर्गो	बुध	मूल	सूर्य

R वक्री को दर्शाता है

हर्ष बल

संस्कृत में हर्ष का अर्थ है "खुशी", और कुछ ग्रहों की स्थिति उन्हें आराम पहुंचाती है, तथा उनके बल या शक्ति को बढ़ाती है।

- **स्थान बल:** यह पहला बल है, जो ग्रह की स्थितिगत शक्ति को दर्शाता है।
- **उच्च/स्वक्षेत्री बल:** दूसरा बल, जो तब प्राप्त होता है जब कोई ग्रह अपनी उच्च राशि या स्वराशि में होता है।
- **स्त्री-पुरुष बल:** तीसरा बल, जो ग्रहों के लिंग और उनके द्वारा अधिगृहित भावों से निर्धारित होता है।
- **दिन-रातिर बल:** चौथा बल, जो दिन या रात के आधार पर ग्रहों द्वारा अर्जित शक्ति को दर्शाता है।

नीचे दी गई तालिकाएँ वार्षिक कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार प्रत्येक ग्रह को मिलने वाली शक्ति को दर्शाती है। ग्रह की शक्ति उसके द्वारा अर्जित अंकों से निर्धारित होती है: 20 अंक प्राप्त करने पर इसे अत्यंत बलवान (पूर्ण पराक्रमी) माना जाता है, 15 अंक प्राप्त करने पर बलवान (पूर्ण बली), 10 अंक प्राप्त करने पर मध्यम (मध्य बली), 5 अंक प्राप्त करने पर कमजोर (अल्प बली) और 0 अंक प्राप्त करने पर दुर्बल (निर्बली) माना जाता है।

नीचे 35th वर्ष के लिए हर्ष बल को दर्शाने वाली तालिका दी गई है:

ग्रह	स्थान	उच्च	स्त्री-पुरुष	दिन-रातिर	कुल	शक्ति
सूर्य	0	0	0	0	0	बलहीन
चंद्र	0	5	0	5	10	मध्यम
बुध	0	0	5	5	10	मध्यम
शुक्र	0	0	5	5	10	मध्यम
मंगल	0	5	0	0	5	कमजोर
गुरु	0	0	5	0	5	कमजोर
शनि	0	5	5	5	15	बलवान

नीचे 36th वर्ष के लिए हर्ष बल को दर्शाने वाली तालिका दी गई है:

ग्रह	स्थान	उच्च	स्त्री-पुरुष	दिन-रात्रि	कुल	शक्ति
सूर्य	0	0	5	5	10	मध्यम
चंद्र	0	0	5	0	5	कमजोर
बुध	0	0	0	0	0	बलहीन
शुक्र	0	5	5	0	10	मध्यम
मंगल	0	0	5	5	10	मध्यम
गुरु	0	0	0	5	5	कमजोर
शनि	5	5	0	0	10	मध्यम

पंचवर्गीय बल

पंच-वर्गीय बल ग्रहों के शक्ति के पाँच अलग-अलग स्रोतों का प्रतिनिधित्व करता है जो वर्षफल में वर्षेश या वर्ष के स्वामी को निर्धारित करने में आवश्यक हैं। इसे बल का सबसे महत्वपूर्ण प्रकार माना जाता है। पाँच घटक हैं:

- **क्षेत्र बल:** किसी विशेष भाव में ग्रह की स्थिति के आधार पर बल।
- **उच्च बल:** किसी ग्रह की उसके उच्च या नीच राशि से निकटता से व्युत्पन्न।
- **हृदा बल:** ग्रह की अपनी राशि में स्वयं, मित्र, शत्रु या तटस्थ ग्रह के अंश में स्थिति द्वारा निर्धारित बल।
- **द्रक्काण बल:** ग्रह की अपनी, मित्र, तटस्थ या शत्रु द्रक्काण (द्रेष्कोण) में स्थिति के आधार पर।
- **नवमांश बल:** ग्रह की अपनी, मित्र, तटस्थ या शत्रु नवमांश में स्थिति द्वारा निर्धारित।

नीचे दी गई तालिकाएँ ऊपर बताए गए पाँच पहलुओं के अनुसार प्रत्येक ग्रह को मिलने वाली शक्ति को दर्शाती है। शक्ति का निर्धारण ग्रहों द्वारा विंशोपक में अर्जित अंकों से होता है। 15 या उससे अधिक अंकों के साथ ग्रह को अत्यंत बलवान (पराक्रमी), 10 से 15 अंकों के साथ बलवान (पूर्ण बलि), 5 से 10 अंकों के साथ मध्यम (मध्य बलि) और 5 से कम अंकों के साथ कमजोर (अल्प बलि) माना जाता है।

नीचे 35th वर्ष के लिए पंच-वर्गीय बल दर्शाने वाली तालिका दी गई है:

ग्रह	क्षेत्र	उच्च	हृदा	द्रेष्काण	नवांश	कुल	विंशोपक	शक्ति
सूर्य	7.5	12.73	7.5	5	2.5	35.22	8.81	मध्यम
चंद्र	22.5	18.1	7.5	2.5	5	55.6	13.9	बलवान
बुध	15	5.41	3.75	5	2.5	31.66	7.91	मध्यम
शुक्र	15	11.15	3.75	2.5	1.25	33.65	8.41	मध्यम
मंगल	15	17.93	3.75	2.5	1.25	40.43	10.11	बलवान
गुरु	7.5	11.13	3.75	7.5	3.75	33.63	8.41	मध्यम
शनि	30	7.31	11.25	5	5	58.56	14.64	बलवान

चंद्र को 13.901 अंक प्राप्त हो रहे हैं, मंगल को 10.108 अंक प्राप्त हो रहे हैं, और शनि को 14.639 अंक प्राप्त हो रहे हैं जिसे बलवान (पूर्णबली) माना जाता है, जो दर्शाता है कि आप इस ग्रह की दशा के दौरान अनुकूल परिणामों की उम्मीद कर सकते हैं।

सूर्य को 8.806 अंक प्राप्त हो रहे हैं, बुध को 7.914 अंक प्राप्त हो रहे हैं, गुरु को 8.408 अंक प्राप्त हो रहे हैं, और शुक्र को 8.412 अंक प्राप्त हो रहे हैं जिसे मध्यम बल (मध्यबली) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसका अर्थ है कि इस ग्रह की दशा के दौरान लाभ मध्यम होगा।

नीचे 36th वर्ष के लिए पंच-वर्गीय बल दर्शाने वाली तालिका दी गई है:

ग्रह	क्षेत्र	उच्च	हृद्	दरेष्काण	नवांश	कुल	विंशोपक	शक्ति
सूर्य	7.5	12.73	7.5	5	3.75	36.47	9.11	मध्यम
चंद्र	15	4.13	3.75	5	2.5	30.38	7.6	मध्यम
बुध	7.5	3.81	15	10	1.25	37.56	9.39	मध्यम
शुक्र	22.5	18.51	11.25	7.5	1.25	61.01	15.25	अत्यंत बलवान
मंगल	22.5	3.88	15	7.5	5	53.88	13.47	बलवान
गुरु	22.5	14.7	15	7.5	1.25	60.95	15.24	अत्यंत बलवान
शनि	30	6.11	15	5	2.5	58.61	14.65	बलवान

गुरु को 15.239 अंक प्राप्त हो रहे हैं और शुक्र को 15.252 अंक प्राप्त हो रहे हैं, जो इसे अत्यंत बलवान (पराक्रमी) के रूप में वर्गीकृत करता है, जो इसकी दशा के दौरान महत्वपूर्ण लाभ का संकेत देता है।

मंगल को 13.469 अंक प्राप्त हो रहे हैं और शनि को 14.651 अंक प्राप्त हो रहे हैं जिसे बलवान (पूर्णबली) माना जाता है, जो दर्शाता है कि आप इस ग्रह की दशा के दौरान अनुकूल परिणामों की उम्मीद कर सकते हैं।

सूर्य को 9.119 अंक प्राप्त हो रहे हैं, चंद्र को 7.596 अंक प्राप्त हो रहे हैं, और बुध को 9.39 अंक प्राप्त हो रहे हैं जिसे मध्यम बल (मध्यबली) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसका अर्थ है कि इस ग्रह की दशा के दौरान लाभ मध्यम होगा।

विंशोत्तरी दशा के परिणाम, जो कि नीचे बताया गया है, वार्षिक कुंडली और जन्म कुंडली दोनों में ग्रह की संयुक्त शक्ति पर निर्भर करते हैं। दोनों कुंडली में ग्रहों की शक्ति आपको यह समझने में मदद करने के लिए प्रदान की गई है कि भविष्यवाणियां तदनुसार कैसे प्रकट होंगी।

वर्षेश्वर

वर्ष भर की घटनाओं को सबसे अधिक प्रभावित करने वाले ग्रह को वर्षेश्वर, वर्षेश, या वर्ष का स्वामी कहा जाता है। एक बलवान वर्षेश सफलता, समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य का वर्ष दर्शाता है, जबकि एक कमजोर वर्षेश संभावित चुनौतियों का संकेत देता है। वर्षेश का चयन पांच योग्य ग्रहों में से एक से किया जाता है, जिन्हें पंचाधिकारी के रूप में जाना जाता है। इन ग्रहों का निर्धारण विशेष ज्योतिषीय बल और स्थितियों के आधार पर किया जाता है।

- **मुंथा स्वामी:** वह ग्रह जिसकी राशि में मुंथा स्थित है।
- **जन्म लग्न स्वामी:** जन्म कुंडली में लग्न का स्वामी।
- **वर्ष लग्न स्वामी:** वार्षिक कुंडली में लग्न का स्वामी।
- **तिर-राशि स्वामी:** वर्ष लग्न और जन्म के समय (दिन या रात) द्वारा निर्धारित।
- **दिन-रातिर स्वामी:** यदि वर्षप्रवेश दिन के दौरान होता है तो सूर्य-राशि का स्वामी, और यदि यह रात में होता है तो चंद्र-राशि का स्वामी।

नीचे दी गई तालिकाएँ वर्षेश्वर की उपाधि के लिए योग्य पंचाधिकारी ग्रहों, उनके पंचवर्गीय बल और वर्ष लग्न पर उनके दृष्टि को दर्शाती हैं।

नीचे दी गई तालिका 35th वर्ष के लिए पंचाधिकारियों को दर्शाती है:

स्वामी	ग्रह	विशेषक	लग्न पर दृष्टि
मुंथा स्वामी	शनि	14.64	मैत्रीपूर्ण
जन्म लग्न स्वामी	मंगल	10.11	तटस्थ
वर्ष लग्न स्वामी	गुरु	8.41	मैत्रीपूर्ण
तिर-राशि स्वामी	शनि	14.64	मैत्रीपूर्ण
दिन-रातिर स्वामी	शुक्र	8.41	तटस्थ

पंचाधिकारियों में शनि की शक्ति सबसे अधिक है, जिससे इसे वर्षेश्वर या वर्ष का स्वामी दार्जित किया जाता है।

चूंकि, वर्षफल में वर्षेश्वर की स्थिति में शनि मध्यम बल वाली दशा में है, यह स्थिति ऐसी होती है कि यह जातक को प्राप्त होने वाले अनुकूल फलों के परिणाम को बहुत कम कर देती है। इस स्थिति में ऐसा हो सकता है कि जातकों को पीड़ा सहन करनी पड़े, जातक को शारीरिक परेशानी का सामना करना पड़े, और जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा पर भी आंच आ सकती है। जातक को वित्त के क्षेत्र में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। जातक की व्यक्तिगत प्रसिद्धि धूमिल हो सकती है। साथ ही, जातकों का ऐसे लोगों के साथ संबंध विकसित हो सकते हैं जिनकी वजह से उसके मान-सम्मान पर भी आंच आ सकती है। जातकों के विरोधियों की संख्या बढ़ सकती है। दूसरों के साथ चलने वाला संघर्ष बढ़ सकता है और जातक की मानसिक चिंताएं भी बढ़ सकती हैं। इस समयावधि को स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाए तो जातकों को श्वास से संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही, जातक का शरीर कमजोर होने की वजह से जातक का शरीर बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकता है और बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। परिजनों के बीच किसी की क्षति और नैतिक स्तर पर ह्रास होने की वजह से जातक की समस्याएं बढ़ सकती हैं।

नीचे दी गई तालिका 36th वर्ष के लिए पंचाधिकारियों को दर्शाती है:

स्वामी	ग्रह	विशेषक	लग्न पर दृष्टि
मुंथा स्वामी	गुरु	15.24	मैत्रीपूर्ण
जन्म लग्न स्वामी	मंगल	13.47	शत्रुतापूर्ण
वर्ष लग्न स्वामी	गुरु	15.24	मैत्रीपूर्ण
तिर-राशि स्वामी	चंद्र	7.6	शत्रुतापूर्ण
दिन-रातिर स्वामी	शनि	14.65	तटस्थ

पंचाधिकारियों में गुरु की शक्ति सबसे अधिक है, जिससे इसे वर्षेश्वर या वर्ष का स्वामी दार्जित किया जाता है।

चूंकि, वर्षफल में वर्षेश्वर के रूप में गुरु की शक्ति मध्यम रूप से मजबूत स्थिति में होने के साथ संबंधित जातकों को समस्याओं एवं विकास की स्थितियों का मिला हुआ अनुभव प्राप्त होता है। इस योग में संबंधित जातकों को ऐसे लोगों से संबंध बनाने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं जो प्रभावशाली होते हैं लेकिन कभी-कभी ऐसी स्थिति भी बन सकती है कि इन प्रभावशाली लोगों का साथ चिंता का कारण बन सकता है और जातकों को अपने स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। शास्त्रों के प्रति एवं अध्ययन के प्रति झुकाव बढ़ने से जातकों को एक प्रकार की मानसिक शांति की प्राप्ति हो सकती है। इस योग में जातकों को वित्तीय नुकसान या बाल-बच्चों से संबंधित भावनात्मक ऊहा-पोह की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है और यह समस्या तब आ सकती है जब गुरु का किसी पाप ग्रह के साथ इशरफा योग बन रहा हो। जातकों का अपने साझेदारों या सहयोगियों के साथ विवाद खड़े हो सकते हैं। साथ ही जातकों को अपनी सहनशक्ति एवं शारीरिक बल की वजह से समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और इन स्थितियों की वजह से जातक के जीवन में उतर-चढ़ाव की स्थिति बढ़ सकती है।

मुंथा

मुंथा, जिसे प्रगति किया हुआ लग्न के रूप में माना जाता है, वर्ष कुंडली में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह जन्म के समय व्यक्ति के लग्न से प्रारम्भ होता है और प्रत्येक वर्ष एक भाव आगे बढ़ता है।

36th वर्ष के लिए, मुंथा आपकी वार्षिक कुंडली में 1st भाव में, मीन राशि में है। परिणामस्वरूप, गुरु, मीन राशि का स्वामी होने के कारण, मुंथेश (मुंथा का स्वामी) बन जाता है, और मीन मुंथा बन जाता है।

35th वर्ष के लिए मुंथा 3rd भाव में, कुम्भ राशि में है, तथा मुंथेश शनि है।

मुंथा का प्रभाव

तृतीय भाव में मुंथा, कुम्भ, 35th वर्ष में

आपकी वार्षिक कुंडली में 3rd भाव में स्थित मुंथा से सद्भाव, खुशी और अन्य सकारात्मक परिणाम मिलने की उम्मीद है, बशर्ते आप इसके लिए व्यक्तिगत प्रयास करें।

मुंथा की स्थिति यदि तीसरे भाव में है तो इस अवधि के दौरान संबंधित जातकों को उनके साहसी प्रयासों की वजह से महत्वपूर्ण उपलब्धियों का मार्ग प्राप्त हो सकता है। उनको अपने किए गए कार्यों की वजह से नाम और प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। जातक के दृढ़ संकल्प की वजह से और दूसरों की मदद करने वाले व्यवहार की वजह से अपने सहकर्मियों और बड़े लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सद्भावना का भाव बढ़ेगा, सम्मान बढ़ेगा और इन सभी से जातक की आय में भी वृद्धि होगी। जातक का अपने रिश्तेदारों या भाई बहनों के साथ रिश्ते मजबूत होंगे। उसको सहयोग और खुशी प्राप्त होगा। कुछ छोटी-मोटी यात्रा का अनुभव प्राप्त हो सकता है। इन यात्राओं की वजह से जातक के संबंध बनेंगे खासकर विपरीत लिंग के लोगों के साथ। जातक द्वारा किए जाने वाले कार्यों या उद्यम में सफलता प्राप्त होगी। जातक को सरकारी नौकरी भी मिल सकती है। इसकी वजह से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अपने विरोधियों पर जातक को जीत प्राप्त होगी। यदि कोई कानूनी मसले हैं तो उसमें भी जीत प्राप्त होगी। जातक का स्वास्थ्य मजबूत स्थिति में होगा। सामान्य तरह की सुख-सुविधाओं का आनंद जातक को प्राप्त होगा। जातक के जीवन से जुड़ा यह समय विकास की योजनाओं से संबंध होगा। जातक को व्यक्तिगत स्तर पर और व्यवसायिक दोनों ही स्तर पर कई प्रकार की उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं। जातक इन अवसरों को अपने जीवन में शामिल करें और आने वाली चुनौतियों का सही ढंग से सामना करें व अपनी शक्ति व क्षमता पर भरोसा रखें।

प्रथम भाव में मुंथा, मीन, 36th वर्ष में

आपकी वार्षिक कुंडली में 1st भाव में स्थित मुंथा से सद्भाव, खुशी और अन्य सकारात्मक परिणाम मिलने की उम्मीद है, बशर्ते आप इसके लिए व्यक्तिगत प्रयास करें।

मुंथा की उपस्थिति यदि पहले भाव में है तो इस अवधि के दौरान संबंधित जातक को महत्वपूर्ण विजय की प्राप्ति और उच्च पद पर सुशोभित होने के अवसर प्राप्त होने की उम्मीद की जा सकती है। जातक द्वारा किए जाने वाले प्रयास सफल होंगे। जातक अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त कर सकेगा और उसे सम्मान व पहचान दोनों ही प्राप्त होगी। जातक को अपने अधिकारियों से अनुग्रह प्राप्त होने की वजह से नौकरी के नए अवसर भी प्राप्त हो सकते हैं या फिर जातक को अपनी आय बढ़ाने के अतिरिक्त स्रोत भी प्राप्त हो सकते हैं। इससे जातक की संपत्ति में वृद्धि होगी और जातक को अतिरिक्त कमाई भी होगी। जातक द्वारा किए जाने वाले मेहनत का शुभ फल प्राप्त होगा। जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हालांकि, जातक की व्यक्तिगत परिस्थितियां कुछ स्तर पर बदल सकती हैं। जैसे कि, जातक को अपने निवास स्थान में बदलाव करना पड़ सकता है। या फिर, जातक को किसी बच्चे के पैदा होने की खुशखबरी प्राप्त हो सकती है। इस तरह के शुभ संकेत समय अवधि में प्राप्त हो सकते हैं। साथ ही जातक जब इन सभी प्रकार के बदलावों को सही ढंग से व्यवस्थित कर लेगा तो उसको अपने शत्रुओं का भी सामना करना पड़ सकता है। हालांकि, जातक की स्थिति मजबूत होगी और वह अपने शत्रुओं की चुनौतियों को आसानी से पार कर सकता है। जातक से यह उम्मीद की जाती है कि वह इस अनुकूल समय का पूरा लाभ उठाए। क्योंकि, यह समय उसके करियर में उन्नति प्रदान करने वाली है। साथ ही, यह समय अन्य सभी प्रकार की समृद्धि प्रदान करने वाला है। जातक की प्रतिष्ठा मजबूत होगी और जातक संतुष्टि भरे मन से अपनी भविष्य की तरफ आगे बढ़ सकता है।

मुंथा के स्वामी

35th वर्ष में तृतीय भाव में मुंथेश शनि

जैसे ही मुंथेश का गोचर आपके तीसरे भाव से होगा, आप अपने भाई-बहनों और करीबी रिश्तेदारों में महत्वपूर्ण प्रकार के विकास का अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। आपको अपने छोटे भाई-बहनों से आराम प्राप्त होगा, यह उम्मीद भी कर सकते हैं कि उनसे प्रोत्साहन भी मिलेगा और इससे आपका साहस और आत्मविश्वास बढ़ेगा। आपके द्वारा किए जाने वाले निजी प्रकार के उद्यम सफल होंगे क्योंकि स्वयं के द्वारा किए जाने वाले प्रयासों पर आप विश्वास करते हैं। आप उपलब्धियों को प्राप्त करने और उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे। आपको केवल अपनी निजी उपलब्धियों से खुशी की प्राप्ति नहीं होती वरन् अपने भाई-बहनों की सफलताओं से भी खुशी मिलती है और यह आनंद की भावना को और बढ़ाएगी। आत्म-अनुशासन का ध्यान रखना अति आवश्यक होगा, अपनी क्षमता को सही ढंग से संचालित करने और आकांक्षाओं को प्राप्त करने में यह सहायक होगा। पारिवारिक रिश्ते आपके विकास के लिए मजबूत आधार प्रदान करेंगे, लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहने में भी मदद करेंगे, इसलिए जरूरी है कि अपने पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाने वाले प्रभावी स्वभाव को अपनाएं।

36th वर्ष में तृतीय भाव में मुंथेश गुरु

जैसे ही मुंथेश का गोचर आपके तीसरे भाव से होगा, आप अपने भाई-बहनों और करीबी रिश्तेदारों में महत्वपूर्ण प्रकार के विकास का अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। आपको अपने छोटे भाई-बहनों से आराम प्राप्त होगा, यह उम्मीद भी कर सकते हैं कि उनसे प्रोत्साहन भी मिलेगा और इससे आपका साहस और आत्मविश्वास बढ़ेगा। आपके द्वारा किए जाने वाले निजी प्रकार के उद्यम सफल होंगे क्योंकि स्वयं के द्वारा किए जाने वाले प्रयासों पर आप विश्वास करते हैं। आप उपलब्धियों को प्राप्त करने और उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे। आपको केवल अपनी निजी उपलब्धियों से खुशी की प्राप्ति नहीं होती वरन् अपने भाई-बहनों की सफलताओं से भी खुशी मिलती है और यह आनंद की भावना को और बढ़ाएगी। आत्म-अनुशासन का ध्यान रखना अति आवश्यक होगा, अपनी क्षमता को सही ढंग से संचालित करने और आकांक्षाओं को प्राप्त करने में यह सहायक होगा। पारिवारिक रिश्ते आपके विकास के लिए मजबूत आधार प्रदान करेंगे, लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहने में भी मदद करेंगे, इसलिए जरूरी है कि अपने पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाने वाले प्रभावी स्वभाव को अपनाएं।

ग्रह के भाव

नीचे दी गई तालिकाएं आपके 35th और 36th वर्षों के वर्षप्रवेश के दौरान वार्षिक कुंडली में ग्रहों की स्थिति दर्शाती हैं, और उनके नीचे प्रत्येक वर्ष के लिए ग्रह-भावों की भविष्यवाणियां हैं।

ग्रह	35th वर्ष		36th वर्ष	
	भाव	राशि	भाव	राशि
सूर्य	3	कुम्भ	12	कुम्भ
चंद्र	6	वृषभ	7	कन्या
बुध	2	मकर	12	कुम्भ
शुक्र	2	मकर	1	मीन
मंगल	2	मकर	4	मिथुन
गुरु	5	मेष	3	वृषभ
शनि	3	कुम्भ	12	कुम्भ
लग्न	1	धनुष	1	मीन
राहु R	4	मीन	1	मीन
केतु R	10	कन्या	7	कन्या

तृतीय भाव में सूर्य (35th वर्ष)

सूर्य की स्थिति तीसरे भाव में हो, जिसे अपोक्लिम भाव या सहज भाव के रूप में भी जाना जाता है, तो इसके अंतर्गत आप आत्मविश्वास, साहस और लोकप्रियता प्राप्त आदि में बेहतर विकास होने की उम्मीद कर सकते हैं। इस स्थिति द्वारा आपके उत्साह और वीरता में वृद्धि होती है और आपके करियर में पहचान मिलती है उच्च पदाधिकारियों से सम्मान प्राप्त होने की भी संभावना होती है। साथ ही, इसमें वित्तीय लाभ होने की संभावना है और आप एक नई ऊर्जा के साथ प्रतिस्पर्धियों पर हावी हो सकेंगे। हालांकि, अपने भाई बहन के रिश्तों के स्तर पर सतर्क रहने की आवश्यकता है, क्योंकि आप पर अशुभ प्रभाव पड़ सकता है या तनाव बढ़ सकता है। इन संबंधों की गतिशीलता को यदि ध्यान से समझते हैं तो इनसे जुड़े संघर्षों से बचने में सहयोग मिलेगा। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि, इस अवधि के दौरान जब तक आप अपने परिवार के साथ आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूक रहेंगे, साथ ही प्राप्त होने वाले सकारात्मक अवसरों को अपनाते रहेंगे तब तक आपको सफलता प्राप्त होने की संभावना है, साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को पहचान मिलेगी, आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और कामयाबी के माध्यम से आपको पुरस्कृत भी किया जाएगा।

चूंकि, इस भाव के स्वामी की स्थिति अच्छी है और वह शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध में है, इसलिए आप यह उम्मीद कर सकते हैं कि आपको अनुकूल परिणाम की प्राप्ति होगी।

चूंकि, सूर्य के साथ क्रूर ग्रह जुड़े हुए हैं, इसलिए आप यह उम्मीद कर सकते हैं कि इसके द्वारा नकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे खास करके आपका अपने भाई बहनों के साथ रिश्ते प्रभावित होंगे। जब सूर्य की स्थिति इस प्रकार की अशुभ प्रभाव वाली हो तो इसके द्वारा आपके भाइयों को नुकसान पहुंच सकता है।

द्वादश भाव में सूर्य (36th वर्ष)

आपके बारहवें भाव में सूर्य की स्थिति होने की वजह से आपको खर्च और स्वास्थ्य से संबंधित कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं जिनपर आपको ध्यान देने की जरूरत है। आपको सर दर्द, आंखों की समस्या और पेट में तकलीफ होने जैसी स्वास्थ्य की समस्याएं आ सकती हैं, इनकी वजह से अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और आवश्यकता पड़ने पर डॉक्टर से सहायता लेना महत्वपूर्ण है। अत्यधिक पैसे खर्च होने की समस्या को कम करने के लिए आप जरूरी खर्चों का हिसाब रखें, बजट बनाएं और जल्दबाजी या आवेग में खरीदारी करने से बचें। अपने जीवनसाथी व मां के साथ जुड़े व्यक्तिगत संबंधों में आने वाली संभावित निराशा के प्रति सतर्क रहें, धैर्य बनाकर रखें और स्पष्ट बातचीत करने की कोशिश करें, इस समझदारी से सद्भावना बनाने में सहयोग मिलेगा। अपनी ईमानदारी के व्यवहार को मजबूत रखें क्योंकि यदि आप पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं तो, इस स्थिति में दूसरों का समर्थन पाने के लिए साक्ष्यों को एकत्रित करने पर ध्यान दें। हालांकि, इस स्थिति की वजह से आपको धन का नुकसान हो सकता है और परेशानी भी आ सकती है। पुण्य या धार्मिक कार्यों में शामिल होने की वजह से आपको सात्वता प्राप्त होगी, साथ ही आपके अंदर उद्देश्य पूर्ण जीवन की भावना भी बढ़ेगी। अपने मृदुल स्वभाव और सकारात्मक दृष्टिकोण से इन सभी समस्याओं को का समाधान करने में मदद मिलेगी, इससे इन चुनौतियों का सामना सकिरयता से कर सकेंगे।

चूंकि, इस भाव में शुभ ग्रह सूर्य को प्रभावित करते हैं जिसकी वजह से आपकी रुचि धार्मिक कार्यों में बढ़ सकती है और आप पुण्य के कामों में या धार्मिक कामों में पैसे खर्च कर सकते हैं।

षष्ठम भाव में चंद्र (35th वर्ष)

आपके छठे भाव में चन्द्रमा के होने से आपको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपका मन खिन्न व परेशान रह सकता है। शत्रुओं और खतरों से संबंधित किसी भी चिंता और भय को दूर करना आवश्यक है। तनाव को कम करने व अपनी मानसिक शांति को बढ़ाने के लिए ध्यान अथवा मेडिटेशन का अभ्यास करें। वित्तीय लेन-देन में सतर्कता बरतें क्योंकि आपको धन की हानि हो सकती है; धन के सही प्रबंधन से आपको इससे निपटने में मदद मिल सकती है। स्वास्थ्य समस्याएं, विशेष रूप से छाती में संक्रमण और आंखों की बीमारियाँ हो सकती हैं; नियमित जांच और संतुलित जीवनशैली के साथ अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। गलतफहमी के कारण झूठे आरोप लग सकते हैं; वरिष्ठ अधिकारियों और सहकर्मियों के साथ खुले संवाद से संघर्षों को कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पानी से संबंधित गतिविधियों के प्रति सतर्क रहें, क्योंकि पानी से संबंधित भय उत्पन्न हो सकते हैं। इन चुनौतियों का सकिरय रूप से समाधान करके, आप और अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रख सकते हैं।

सप्तम भाव में चंद्र (36th वर्ष)

आपके सप्तम भाव में चंद्रमा के होने से, आपके व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन दोनों में महत्वपूर्ण प्रगति हो सकती है। व्यावसायिक क्षेत्र में सरकार द्वारा मान्यता मिलने से अच्छी पदोन्नति हो सकती है। आपको जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा, जिससे आप सुख का अनुभव करेंगे। आपको घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों, विशेष रूप से यात्रा के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा। जलीय वस्तुओं का व्यापार करने से अत्यधिक लाभ हो सकता है। विपरीत लिंग के साथ सम्बन्ध आपके जीवन में स्नेह और रोमांस ला सकते हैं, जिससे संभवतः विवाह भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह स्थान शिक्षा और व्यावसायिक उपक्रमों में सुधार करता है। हालाँकि, यदि चंद्रमा पीड़ित है, तो आप और आपके जीवनसाथी के बीच तनाव पैदा हो सकता है, जिससे संभावित रूप से खिन्नता और स्वास्थ्य सम्बन्धी चिंताएँ हो सकती हैं। संभावित नुकसान से बचने व लाभों का पूरा आनंद लेने के लिए बेहतर संबंधों को विकसित करने और संतुलन बनाए रखने पर ध्यान दें।

द्वितीय भाव में बुध (35th वर्ष)

बुध के आपके दूसरे भाव में होने से वित्तीय लाभ, निरंतर प्रगति और जीवन के विभिन्न पहलुओं में निरंतर सफलता सुनिश्चित होती है। आपके परिवार और रिश्तों में खुशी और आनंद का माहौल रह सकता है, साथ ही बाधाएं समाप्त होती हैं शत्रुओं का नाश होता है। बढ़ती लोकप्रियता और अच्छे स्वास्थ्य से आप संतुष्ट होंगे, जिससे यह समय से सुख-शांति का रहेगा। आय और धन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी साथ ही पारिवारिक सद्भाव बना रहेगा, आपका नाम और प्रसिद्धि बढ़ेगी। आप किसी भी विरोधी पर हावी होंगे और उनकी चुनौतियों को आसानी से पार कर पाएंगे। हालाँकि, संभावित कष्टों से सावधान रहें, क्योंकि वे पारिवारिक कलह और वित्तीय असफलताओं का कारण बन सकते हैं। परिवार के सदस्यों के समर्थन से, आपको व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में सफलता मिलेगी।

चूँकि इस भाव में बुध अशुभ ग्रहों से पीड़ित है, इसलिए पारिवारिक कलह और धन की हानि हो सकती है, जिससे स्थिरता और वित्तीय सुरक्षा में बाधा उत्पन्न होगी।

द्वादश भाव में बुध (36th वर्ष)

बुध के आपके बारहवें भाव में रहने से आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है व मानसिक तनाव बढ़ सकती है। स्वास्थ्य खराब रहने से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। आप अपनी स्वयं की देखभाल करें और आराम को प्राथमिकता दें। खर्चों में वृद्धि की संभावना है, विशेषकर चिकित्सा व्यय या अन्य अप्रत्याशित वित्तीय आवश्यकताओं के कारण, जो आपके तनाव स्तर को भी बढ़ा सकते हैं। बड़ों और अधिकारियों के साथ तनाव पैदा हो सकता है, जिस कारण टकराव हो सकते हैं जो आपकी स्थिति या पद को प्रभावित कर सकते हैं। इन कठिनाइयों को कम करने के लिए, झगड़े और गलतफहमी को रोकने के लिए परिवार के सदस्यों के साथ सम्बन्ध बेहतर बनाएं। धार्मिक गतिविधियों में शामिल होना आपके लिए लाभकारी होगा व इस स्थिति के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी। सकारात्मक मानसिकता बनाए रखने और ज़रूरत पड़ने पर सहायता लेने से, आप इस समय आने वाली चुनौतियों से निपट सकते हैं।

चूँकि इस भाव में बुध शुभ ग्रह के प्रभाव में है, यह धार्मिक कार्यों में व्यय को बढ़ावा देता है, जो उदारता की भावना और उच्च आदर्शों के प्रति समर्पण को बढ़ावा देता है।

द्वितीय भाव में शुक्र (35th वर्ष)

आपके दूसरे भाव में शुक्र के होने से, आपको विदेशी उपक्रम से खुशी मिलने के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में धन व समृद्धि की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको अपनी समृद्धि को और अधिक बढ़ाने वाले के लिए पशुधन को खरीदने का अवसर प्राप्त हो सकता है। यह समय करियर में विकास के लिए सबसे अनुकूल है। आपका अपने पति-पत्नी के साथ रिश्तों में सुधार आएगा, जिससे आपके घरेलू जीवन में सौहार्द पैदा होगी, यद्यपि आपके शत्रुओं की संख्या में कमी आएगी इस तरह सहज संवाद के मार्ग खुलेंगे। नए परिचितों के आगमन से आपके सामाजिक दायरे में वृद्धि की आशा की जाती है जिससे आपके उत्साह में वृद्धि होगी और आपको संतुष्टि प्राप्त होगी। आपकी उदारता आपको सभी तरह की सुख-सुविधाएँ दिलाएगी और आप अपनी इच्छाओं की पूर्ति का आनंद लेंगे।

आपकी सफलता प्राप्ति में मित्र अहम भूमिका अदा करेंगे, जिससे आपके धन में प्रचुर वृद्धि होगी और व्यवसाय में सफलता मिलेगी। महिलाओं के साथ आपके संबंध आपके लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होंगे और वाहन की प्राप्ति होने से आपकी जीवनशैली में सुधार आएगा। कुल मिलाकर, यह अवधि आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने वाली और खुशियों से भरी होगी। यह लक्ष्य प्राप्ति और कीमती परिसंपत्ति के संचय की ओर संकेत करती है।

प्रथम भाव में शुक्र (36th वर्ष)

शुक्र के आपके पहले भाव में होने से आपको अत्यधिक चमक-धमक, विशेष रूप से प्रेम संबंधों और महिलाओं की संगति से जुड़े सामाजिक जीवन का अनुभव और आनंद प्राप्त होता है। ग्रहों की यह स्थिति धन संचय करने और आपके व्यवसाय या करियर में अच्छी खासी प्रगति करने को बढ़ावा देने के साथ-साथ समाज में आपकी प्रतिष्ठा को भी बढ़ाती है। आप अपनी आय में बढ़ोतरी और व्यक्तिगत इच्छाओं को पूरा होते हुए भी देख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, शुक्र ग्रह आभूषणों और वस्त्रों के साथ-साथ अन्य सुख-सुविधाएँ भी प्रदान कराता है, जिससे आपका संपूर्ण स्वास्थ्य भी बेहतर होता है। इससे संबंध फलने फूलेंगे, घर में सामंजस्य और कामुकता भरी खुशी में वृद्धि होगी। यह अवस्था करियर में विकास के लिए अनुकूल है, आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सराहना और प्रशंसा मिलेगी। कुल मिलाकर, आपके जीवन में उन प्रसन्नता, समृद्धि और आनंद भरे अनुभवों से भरे समय की आशा की जाती है, जो आपके व्यक्तिगत और व्यवसायिक जीवन को बेहतर बनाए।

द्वितीय भाव में मंगल (35th वर्ष)

मंगल के आपके दूसरे भाव में होने से, आपको संपत्ति और रिश्तदारों से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इससे आर्थिक हानि होने की संभावना बढ़ जाती है, जो आपके खर्चों और वित्तीय विकल्पों की सावधानीपूर्वक जाँच करना आवश्यक बना देता है। चोरी या सरकार से जुड़े मामलों को संबोधित करने के लिए, घर में बचाव का सहारा लें और अपने आसपास के प्रतिवेश से जागरूक रहें। आँखों से जुड़ी सेहत भी एक मुख्य केंद्र बन सकता है, इसलिए नियमित रूप से अपनी आँखों की जाँच करवाने और उनकी देखभाल करने को प्राथमिकता दें। इसके अतिरिक्त, अपने बातचीत करने पर ध्यान दें, क्योंकि बहुत ही कठोर या ककर्श बातचीत करना आपके रिश्तेदारों के साथ वाद-विवाद पैदा कर सकता है, जो आपके परिवार के बीच अनचाहा तनाव पैदा कर सकता है। यदि आपके जीवनसाथी के लिए स्वास्थ्य चिंताएँ पैदा हो जाए या आप अपने व्यवसाय में असफलता का सामना कर रहे हो, तो सहयोग की तलाश करें और एक संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखें। इन क्षेत्रों को जागरूकता और सावधानीपूर्वक ध्यान देकर, आप चुनौतियों को रोक सकते हैं और एक सामंजस्यपूर्ण वातावरण तैयार कर सकते हैं।

चतुर्थ भाव में मंगल (36th वर्ष)

मंगल के चौथे भाव में स्थित होने से, आपको भावात्मक चुनौतियों और विवादों का सामना करना पड़ सकता है जो आपके रिश्तों और घर में स्थिरता को प्रभावित कर सकता है। सहकर्मियों और विश्वास योग्य व्यक्तियों के साथ तनाव उत्पन्न हो सकता है, जिससे विवाद हो सकते हैं, सामंजस्यता भंग हो सकती है। धैर्य रखने और खुले तौर पर बातचीत का अभ्यास करना ही इन तनावों को कम करने का समाधान है। अपने सामान और संपत्ति पर एहतियात बरतें, क्योंकि चोरी या आग लगने का जोखिम बढ़ सकता है, अपनी संपत्ति की सुरक्षा करने के लिए उपायों को अमल में लाएं। यह स्थिति यात्रा के दौरान कष्ट होने का भी संकेत हो सकती है, खासतौर पर यदि इसमें कोई विदेशी स्थान शामिल हो, अतः सावधानीपूर्वक योजना बनाना आवश्यक होगा। अपनी माता के स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं पर ध्यान देना आवश्यक होगा, अतः सहानुभूति और सहयोग प्रदान करना अधिक उचित होगा। सकारात्मक रिश्तों पर ध्यान देना और घर में शांतिपूर्ण वातावरण बनाए रखें, अपने व्यक्तिगत जीवन में आप इन चुनौतियों को प्रतिरोधक्षमता और सामंजस्यता बनाकर कम कर सकते हैं।

पंचम भाव में बृहस्पति (35th वर्ष)

आपके पाँचवें भाव में गुरु की उपस्थिति से आपको शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिल सकती है। बच्चे का जन्म भी हो सकता है जिससे आपके जीवन की नई शुरुआत होगी। आपको आपकी शिक्षा से भी लाभ प्राप्त होगा। आपके द्वारा किए जा रहे आध्यात्मिक अभ्यास आपको लाभ देंगे। शत्रु परास्त होंगे। धार्मिक कार्यों एवं पूजा-पाठ में रुचि बढ़ेगी।

आपके ज्ञान और शिक्षा में वृद्धि होगी, जिससे आपको आर्थिक लाभ होगा व आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आपकी प्रसिद्धि व गरिमा में वृद्धि होगी, इससे आपके शत्रु परास्त होंगे। इस समय में आपको संतान सुख की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको शैक्षिक गतिविधियों में सफलता मिलेगी, साथ ही आपके नाम व प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आपकी सामाजिक व व्यावसायिक स्थिति भी सुधरेगी।

तृतीय भाव में बृहस्पति (36th वर्ष)

गुरु के आपके तीसरे भाव में होने से आपको धन, लोकप्रियता और उच्च पद प्राप्त हो सकते हैं। यात्रा के माध्यम से नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं। धार्मिक उत्साह की प्रबल भावना से प्रेरित मित्रों और रिश्तेदारों के साथ सुखद पुनर्मिलन के साथ-साथ आपका ज्ञान और प्रतिष्ठा बढ़ सकती है। परिवार और दोस्तों के साथ सम्बन्ध मजबूत होंगे। सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाने और व्यावसायिक प्रयास करने से लाभ होगा।

इसके अतिरिक्त, आप धार्मिक गतिविधियों में अधिक रुचि लेंगे। आप यात्रा भी कर सकते हैं, जो आपके भाई-बहनों के लिए फायदेमंद होगी। करियर में उन्नति और आय में वृद्धि होगी। अचानक दुर्घटना या वित्तीय हानि से सावधान रहें। कुल मिलाकर, इस अवधि में आपके ज्ञान और सम्मान में वृद्धि होगी और आपका जीवन समृद्ध होगा।

तृतीय भाव में शनि (35th वर्ष)

आपकी परेशानियाँ समाप्त होंगी, जिससे आप अपनी पहले की स्थिति पुनः प्राप्त कर सकेंगे। सरकारी निकायों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपकी धन-सम्पदा में वृद्धि होगी। शत्रु परास्त होंगे, आपके प्रयास सफल होंगे, जिससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

आपके उत्साह से आपको जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी, जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आपको उच्च अधिकारियों से सहयोग मिलेगा। ध्यान रखें कि आपके बढ़ते प्रभाव के कारण भाई-बहनों के साथ विवाद हो सकता है। इस अवधि में आपके शत्रु परास्त होंगे, आपको जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी, जिससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा। इस अवधि का लाभ उठाएं और अपनी ऊर्जा का बेहतर उपयोग करें।

द्वादश भाव में शनि (36th वर्ष)

बारहवें भाव में शनि के होने से आपकी पद-प्रतिष्ठा में हानि हो सकती है साथ ही धन से सम्बन्धित समस्याएं भी हो सकती हैं। अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं, जिससे आपको धन से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है व आपको आँखों, पैरों, या हृदय की बीमारी हो सकती है। ये बीमारियाँ आपके व आपके जीवनसाथी दोनों को परेशान कर सकती हैं। परिवार के सदस्यों से वाद हो सकता है, जिससे आपका मन खिन्न रह सकता है। इन परेशानियों को दूर करने के लिए, अनावश्यक खर्च से बचें, अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें व परिवार के सदस्यों से स्पष्ट बातचीत करें। आपका अपने उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है, अतः उनसे संभल कर बात करें व उचित व्यवहार करें। नम्र और व्यवस्थित रहने से आप इन परेशानियों को दूर कर सकेंगे।

चतुर्थ भाव में राहु (35th वर्ष)

राहु के चौथे भाव में स्थित होने पर, आप अपने परिवार के भीतर तनाव और अपने घर तथा संपत्ति के संबंध में चुनौतियाँ महसूस कर सकते हैं। आपकी माता जी के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, जिसके साथ ही आपकी हैसियत या सम्मान में संभावित गिरावट आ सकती है। यात्रा के दौरान कठिनाइयाँ आ सकती हैं, जिससे आपको कुछ दुखद अनुभव होंगे। इन मामलों में कमी लाने के लिए, यह जरूरी है कि विवादों, विशेष रूप से संपत्ति से संबंधित मामलों को शांति पूर्वक निपटाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों के साथ सीधा संपर्क करें। वित्तीय तंगी से बचने के लिए अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, और बीमारी से बचने के लिए अपने स्वास्थ्य को प्राथमिता दें। कठिन समय में अपना संतुलन कायम रखें, चूँकि सकारात्मक रिश्तों पर ध्यान देने से आप इस चुनौतीपूर्ण अवधि से निकल सकते हैं, जिससे आपके घरेलू जीवन में भी स्थिरता और शांति आयेगी।

प्रथम भाव में राहु (36th वर्ष)

पहले भाव में स्थित राहु भावनात्मक उथल-पुथल और मानसिक तनाव ला सकता है। आप अपने काम में बाधाओं का सामना कर सकते हैं, जिससे निराशा और देरी हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ, विशेष रूप से आँखों से संबंधित, सिर में दर्द, और जख्म होना आदि पैदा हो सकती हैं। दुश्मनों का डर बढ़ सकता है, जिससे आपका तनाव का स्तर बढ़ेगा, और विशेष परिस्थितियों में आप अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान में कमी महसूस कर सकते हैं। इन प्रभावों को कम करने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि आप अपनी जमीन से जुड़े रहें, भावनात्मक नियंत्रण कायम रखें, और गैर-जरूरी विवादों से बचें। इसके आलावा, बहुत अधिक खर्च करने के प्रति सावधान रहें और अपने जीवन-साथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, क्योंकि वे भी कुछ शारीरिक परेशानियाँ महसूस कर सकते हैं। तनाव को नियंत्रित करना और अपने समग्र विकास पर ध्यान देना आपको इस अवधि में चुनौतियों का सामना करने में मदद करेंगे।

दशम भाव में केतु (35th वर्ष)

केतु के दसवें भाव में स्थित होने के कारण, आपको व्यावसायिक कामों में परेशानियों से निपटना पड़ सकता है, जिससे दुख और संपत्ति की हानि की संभावना है। विशेषतौर पर ज़मीन-जायदाद संबंधी खर्चों जैसे और भी खर्च बढ़ सकते हैं जो तनावपूर्ण होंगे। अधिकारियों या शासक से डर से अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप नौकरी में परिवर्तन या निवास स्थान में परिवर्तन की सम्भावना है। इसके अलावा आपको अपनी माँ के स्वास्थ्य की भी चिंता हो सकती है, जो आपके दिमाग पर गंभीर असर डाल सकती है। जहां आपका पद खोने की आशंका है, याद रखें कि अगर केतु किसी योगकारक ग्रह के साथ संरेखण में आता है तो पदोन्नति का योग बन सकता है। इन परेशानियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए लचीलेपन और अनुकूलनशीलता के साथ आगे बढ़ना, अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने और खर्चों को ठीक तरह से करने पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है।

सप्तम भाव में केतु (36th वर्ष)

केतु के सातवें भाव में स्थित होने के कारण, आप महसूस करेंगे कि आपके रिश्तों में, खासतौर से जीवनसाथी के साथ मतभेद बढ़ गए हैं। ऐसे संकट जो इस स्थिति के कारण उत्पन्न होती हैं, उनसे बचने के लिए खुलकर बातचीत करना और अपने जीवनसाथी को समझने पर ध्यान दें जिससे एकता बनी रहे। आपको अपनी वित्तीय स्थिति पर ध्यान जरूर देना चाहिए क्योंकि वित्तीय हानि होने की संभावना है, व्यर्थ खर्च करने से बचने के लिए बजट बनाएं और अपने खर्चों पर ईमानदारी से नज़र रखने के बारे में सोचें। इसके साथ-साथ, संतुलित आहार लें नियमित जाँचें करा करें, खासतौर पर पेट के निचले हिस्से से संबंधित बीमारियों से बचें, अपनी और अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। बारंबार यात्राओं के कारण भी तनाव हो सकता है; अपनी यात्रा के दौरान आराम के क्षणों को भी शामिल करने की कोशिश करें। इन उद्यमी मापदंडों को अपनाकर, आप केतु द्वारा लाई गई अशान्ति से बच सकते हैं और आने वाले पलों को अधिक स्थिर और पूर्ण बना सकते हैं।

विंशोत्तरी मुद्दा दशा

वर्षफल में, दशा एक अवधि प्रणाली को दर्शाती है जो व्यक्ति के जीवन में घटनाओं के समय की भविष्यवाणी के लिए उपयोग की जाती है। इसकी गणना करने के लिए तीन मुख्य तरीकों का उपयोग किया जाता है: मुद्दा दशा, योगिनी दशा और पत्यायनी दशा, जिसमें मुद्दा दशा सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। विशेष रूप से, विंशोत्तरी मुद्दा दशा का उपयोग वर्ष कुंडली में ग्रहों की अवधि निर्धारित करने के लिए किया जाता है, जो वर्ष के लिए महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाता है। इसे पाराशरी प्रणाली की विंशोत्तरी दशा के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जिसका उपयोग जन्म कुंडली में आजीवन भविष्यवाणियों के लिए किया जाता है।

नीचे दी गई तालिका आपके 35th वर्ष के लिए ग्रहों की विंशोत्तरी मुद्दा दशा दर्शाती है।

ग्रह	प्रारंभ होगा	समाप्त होगा
सूर्य	30 December, 2024	17 January, 2025
चंद्र	17 January, 2025	17 February, 2025

सूर्य (30 December, 2024 - 17 January, 2025)

सूर्य आपकी वार्षिक कुंडली में मध्यम शक्ति का है और आपकी जन्म कुंडली में मध्यम स्थिति में है। दोनों चार्ट में सूर्य की संयुक्त शक्ति इसकी दशा के दौरान मिश्रित प्रभाव दर्शाती है।

वर्षफल में सूर्य की महादशा व्यक्ति की मूल पहचान, अधिकारियों से संबंध, प्रेरणा और सहनशक्ति पर केंद्रित समय को दर्शाती है। यह धैर्य, साहस और पहचान से जुड़े अनुभवों को प्रभावित करती है।

सूर्य की दशा जब मध्यम बल वाली हो तो ऐसी स्थिति के दौरान संबंधित जातकों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यह स्थिति जातक के जीवन से संबंधित सकारात्मक प्रभावों को सीमित कर सकती है। हालांकि, स्थानीय स्तर पर जातकों को पहचान प्राप्त करने में सफलता मिल सकती है लेकिन उसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। इस समय के दौरान जातकों को उनके कार्यस्थल पर संघर्ष और विरोध का सामना करना पड़ सकता है। जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली पित्त की बीमारियों की भी संभावना गोचर होती है। जातक को इन कठिनाइयों से निपटने के लिए और अपने जीवन शैली को स्वस्थ बनाए रखने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही स्वास्थ्य संबंधी नियमित जांच करवाने की भी आवश्यकता है। जातकों को चाहिए कि, वे सामुदायिक सेवा से जुड़े कार्यों में शामिल हों। इससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सकती है और लोगों के साथ उनका संपर्क भी बढ़ सकता है। कार्यस्थल पर जातकों को अपना धैर्य बनाकर रखने की जरूरत है जिससे समस्याओं का समाधान करने में सहयोग मिलेगा। जातक अपने आध्यात्मिक विश्वास को अपने जीवन में शामिल करें इससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधित बीमारियों से राहत मिल सकती है।

चंद्र (17 January, 2025 - 17 February, 2025)

चंद्र आपकी वार्षिक कुंडली में बलवान है और आपकी जन्म कुंडली में भी बलवान स्थिति में है। दोनों चार्ट में चंद्र की संयुक्त ताकत इसकी दशा के दौरान सकारात्मक प्रभाव का संकेत देती है।

वर्षफल में चंद्रमा की महादशा व्यक्ति की माँ, मानसिक स्थिति, भावनात्मक संतुष्टि और सौंदर्यबोध के प्रभाव पर जोर देती है। यह सुंदरता, पोषण गुणों और भौतिक सुखों पर ध्यान केंद्रित करती है।

अपनी दशा में चंद्रमा का शक्तिशाली होना प्रचुर मात्रा में समृद्धि देने वाला होता है, जो आपको नाम, मान-सम्मान और सर्वमान्यता दिलाता है। आप संपत्ति, कपड़े और मोती, प्राप्त होने पर अपनी इच्छाओं के पूरा होने के साथ घर की खुशियों में बढ़ोतरी की आशा कर सकते हैं। आमतौर पर, इस समय के दौरान परिणाम बहुत ही सकारात्मक होते हैं, जो आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं में उपलब्धियों को प्रकट करते हैं। यदि चंद्रमा उचित स्थान पर हो तो, आपको मन की शांति, अपने व्यवसाय में सफलता, और जीवन या साझेदार और बच्चों के द्वारा खुशियाँ प्राप्त होने का अनुभव होगा। इसके अतिरिक्त, इस दशा से आभूषणों, संपत्ति और वाहनों की प्राप्ति हो सकती है, जो आपके जीवन को खास तौर पर संपन्न बना देगा।

नीचे दी गई तालिका आपके 36th वर्ष के लिए ग्रहों की विंशोत्तरी मुद्दा दशा दर्शाती है।

ग्रह	प्रारंभ होगा	समाप्त होगा
राहु	17 February, 2025	13 April, 2025
गुरु	13 April, 2025	31 May, 2025
शनि	31 May, 2025	28 July, 2025
बुध	28 July, 2025	18 September, 2025
केतु	18 September, 2025	09 October, 2025
शुक्र	09 October, 2025	09 December, 2025
सूर्य	09 December, 2025	27 December, 2025
चंद्र	27 December, 2025	27 January, 2026

राहु (17 February, 2025 - 13 April, 2025)

राहु आपकी वार्षिक कुंडली में बलवान है और आपकी जन्म कुंडली में मध्यम स्थिति में है। दोनों चार्ट में राहु की संयुक्त ताकत इसकी दशा के दौरान सकारात्मक प्रभाव का संकेत देती है।

वर्षफल में राहु की महादशा पैतृक संबंधों, छिपी चुनौतियों और परिवर्तनकारी अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करती है। यह स्वास्थ्य संघर्षों, जटिल मुद्दों और अपरंपरागत या बौद्धिक गतिविधियों से जुड़ाव को उजागर कर सकता है।

राहु की दशा कई बड़ी कठोर चुनौतियाँ ला सकती है। उसके प्रभाव के तहत, अधिकारियों द्वारा बाधाएँ, धोखा होने की आकांक्षा और यहाँ तक कि विवाद भी हो सकते हैं जिससे प्रतिष्ठा में गिरावट भी हो सकती है। ऐसे जातकों को चोरी से हानि या स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने के साथ साथ संबंधों से जुड़ी भावात्मक परेशानियाँ या प्रियजनों से नुकसान झेलना पड़ सकता है। हालाँकि, यदि राहु सकारात्मक स्थिति में हो तो राज-योग या धन योग का विन्यास हो सकता है, इससे आर्थिक लाभ या किसी अपरंपरागत तरीके से लाभ हो सकता है, हालाँकि ये प्रायः अस्थायी और छिपे हुए खर्चों के साथ आ सकते हैं। इस समय में सावधानी बरतने, लचीलापन और इसके अप्रत्याशित प्रभाव से निपटने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश की आवश्यकता होती है।

गुरु (13 April, 2025 - 31 May, 2025)

गुरु आपकी वार्षिक कुंडली में बहुत बलवान है और आपकी जन्म कुंडली में कमजोर है। दोनों चार्ट में गुरु की संयुक्त ताकत इसकी दशा के दौरान थोड़ा सकारात्मक प्रभाव दर्शाती है।

वर्षफल में बृहस्पति की महादशा ज्ञान, आध्यात्मिक शिक्षा और मार्गदर्शन पर केंद्रित अवधि को दर्शाती है। यह अनुशासन, श्रद्धा, शास्त्रों का ज्ञान और आत्म-नियंत्रण जैसे गुणों पर जोर देती है।

गुरु की दशा बहुत मजबूत स्थिति में होने पर जातक अपने आस-पास के प्रभावी लोगों जैसे अपने नेताओं, गुरुओं, मित्रों एवं बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त होने की आशा कर सकता है। इस समयावधि के दौरान प्राप्त होने वाले इस प्रभाव से जातक को प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। साथ ही, वित्त के क्षेत्र में समृद्धि मिलेगी और जातक द्वारा किए जाने वाले पुण्य कार्यों में भी वृद्धि होगी। ऐसी संभावना है कि जातक के कठोर परिश्रम एवं ईमानदारी को पहचान मिलेगी और इससे सहयोग मिलेगा साथ ही अवसरों के नए रास्ते भी खुलेंगे। इस समयावधि में जातकों के अपने व्यक्तिगत रिश्ते-नातों में मजबूती आएगी। साथ ही, वे जातक जो अपने परिवार को बढ़ाना चाहते हैं, संतान प्राप्ति की इच्छा रखते हैं, उनके लिए यह समय बहुत ही अनुकूल रहेगा। इस समयावधि में जातकों को यह चाहिए कि वे गुरु के दयालु प्रभाव को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करें। यह स्वभाव जातक के जीवन से जुड़े सभी कार्य क्षेत्रों में विकास को बढ़ाने का काम करेगा। यह समयावधि जातकों को भौतिक समृद्धि प्रदान करने के साथ-साथ आध्यात्मिक संतुष्टि दोनों को ही प्रदान करने का काम करेगा।

शनि (31 May, 2025 - 28 July, 2025)

शनि आपकी वार्षिक कुंडली में कमजोर है और आपकी जन्म कुंडली में भी कमजोर स्थिति में है। दोनों चार्ट में शनि की संयुक्त शक्ति इसकी दशा के दौरान प्रतिकूल प्रभाव को दर्शाती है।

वर्षफल में शनि की महादशा धीरज, जिम्मेदारी और जीवन की सीमाओं के विषयों से चिह्नित एक चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह दीर्घायु, चुनौतियों, अनुशासन, सामाजिक भूमिकाओं और स्थिरता, और लचीलेपन से जुड़े अनुभवों पर जोर देती है।

अपनी दशा में शनि के मजबूत होने पर, कड़ी मेहनत के द्वारा खुशियों, संपत्ति, और आय में खास वृद्धि होने की आशा होती है। आपकी मेहनत फलदायी परिणाम प्रदान करवाएगी, विशेषरूप से बाहरी लोगों से पारस्परिक गतिविधियों द्वारा और कई समुदायों से संबंधों द्वारा। कृषि व्यापार, फैक्ट्रियों और बुढ़ी महिलाओं के साथ काम करने से अवसरों में वृद्धि होगी, जिससे वाहनों और पशुओं से लाभ प्राप्त हो सकेगा। विदेशी आमंत्रण और संधियों द्वारा आपकी आय में सकारात्मक रूप से योगदान प्राप्त होगा। यदि आपकी कुंडली में शनि उचित स्थिति में है तो आय और सम्मान दोनों में बढ़ोतरी होगी, जो आपके प्रयासों में समर्पण और दृढ़ता को दर्शाता है। अपनी सीमाओं को बढ़ाने और स्थायी संपर्क बनाने के लिए इस समय को अपनाए।

बुध (28 July, 2025 - 18 September, 2025)

बुध आपकी वार्षिक कुंडली में मध्यम शक्ति का है और आपकी जन्म कुंडली में बलवान स्थिति में है। दोनों चार्ट में बुध की संयुक्त शक्ति इसकी दशा के दौरान सकारात्मक प्रभाव दर्शाती है।

वर्षफल में बुध की महादशा बौद्धिक विकास, वाक्पटुता और कुशल संचार पर केंद्रित समय को दर्शाती है। यह सीखने, विचारों की स्पष्टता और ज्ञान और सत्य की खोज पर जोर देती है।

बुद्ध की दशा मध्यम शक्ति में यदि मजबूत स्थिति में हो तो इसके दौरान जातकों को बेहतर मित्र बनाने व साहित्यिक कार्यों में शामिल होने से धन और प्रतिष्ठा प्राप्त होने की उम्मीद की जा सकती है। हालांकि, इस अवधि के दौरान जातक की पहचान या प्रसिद्धि में कमी आ सकती है। इस वजह से जातक के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ सकता है। जातक को गिरने की वजह से छोटी-मोटी चोट लगने की संभावना है। जातक को चाहिए कि वह गैर-जरूरी चिंताओं से बचने की कोशिश करें और अपने स्वास्थ्य का सही ढंग से प्रबंधन करें। अपने स्वास्थ्य को महत्व दें। यह अवधि जातको को अपनी प्रतिभा अपने बड़े लोगों के समक्ष दिखाने का शुभ अवसर प्रदान कर सकती है। इससे उन्हें धन का लाभ हो सकता है। नए लोगों के साथ उनकी मित्रता भी बढ़ सकती है। सफलताओं की प्राप्ति की दृष्टि से जातकों को चाहिए कि वे इस समयावधि को अच्छे से समझने की कोशिश करें। अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाए रखें और अपने संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करें।

केतु (18 September, 2025 - 09 October, 2025)

केतु आपकी वार्षिक कुंडली में बलवान है और आपकी जन्म कुंडली में कमजोर है। दोनों चार्ट में केतु की संयुक्त ताकत इसकी दशा के दौरान मिश्रित प्रभाव को दर्शाती है।

वर्षफल में केतु की महादशा आत्मनिरीक्षण, गुप्त बीमारियों और आध्यात्मिक विकास से चिह्नित अवधि को दर्शाती है। इसमें रहस्यवाद, मुक्ति और अनसुलझे भावनात्मक मामलों में गहरी रुचि शामिल हो सकती है।

केतु की दशा के दौरान, अनदेखे जोखिम और कठिनाईयों के विरुद्ध और अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। अधिकारियों के साथ टकराव होने से सावधान रहें, क्योंकि इसमें वाद विवाद बढ़ सकता है, जिससे आपके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँच सकता है। ऐसे कार्यों को करने से बचें जिससे विवाद हो सकता है, क्योंकि ऐसी स्थितियाँ आपको कष्ट देने वाली स्थितियों या यहाँ तक कि चुनौती भरी स्थितियों में स्नानांतरण करने में भी डाल सकती है। अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, खासतौर पर आपके पाचन-तंत्र से जुड़े विकार या तनाव से जुड़ी बीमारियाँ। हालाँकि आसपास की ऊर्जा अशांत करने वाली लग सकती है, विचारधीन योजना और विवेक आपको इन अशांत परिस्थितियों से बचाने में मदद कर सकता है, जिससे आप अपने स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा दोनों की सुरक्षा कर सकते हैं।

शुक्र (09 October, 2025 - 09 December, 2025)

शुक्र आपकी वार्षिक कुंडली में बहुत बलवान है और आपकी जन्म कुंडली में कमजोर है। दोनों चार्ट में शुक्र की संयुक्त ताकत इसकी दशा के दौरान थोड़ा सकारात्मक प्रभाव दर्शाती है।

वर्षफल में शुक्र की महादशा इंदिर्य सुख, सौंदर्य बोध और व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं पर केंद्रित समय को दर्शाती है। यह रिश्तों, धन, विलासिता और उत्सव के अवसरों से संबंधित अनुभवों पर प्रकाश डालती है।

शुक्र की दशा मजबूत होने की समयावधि के दौरान जातक अपने जीवन में धन की और आराम की अप्रतिम प्राप्ति की आशा कर सकते हैं। इससे जातकों की जीवनशैली में बहुत प्रभावी स्तर पर सुधार आने की संभावना है। इस अवधि में ऐसी संभावना है कि जातकों के जीवन में कोई नया वाहन प्राप्त होने वाला है और यह उसकी सफलता और प्रगति का प्रतीक बनेगा। जातकों का पाने जीवनसाथी के साथ संबंध मजबूत हो सकते हैं साथ ही इनके रिश्ते में प्रेमपूर्ण साझेदारी बढ़ सकती है और इससे जातक के जो भी मौजूदा संबंध हैं वे सभी मजबूत होंगे। इस समयावधि के दौरान जातकों का स्वास्थ्य बहुत ही बेहतर स्थिति में रहेगा और जातक अपने जीवन के सभी सुख-सुविधाओं और भोग-विलास आदि का आनंद ले सकेगा। अंततः यह कहा जा सकता है कि यह समयावधि जातकों के जीवन में सभी प्रकार की संतुष्टि प्रदान करने वाली होगी। जातक को उसके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों में सफलता मिलेगी। जातकों को भौतिक सुख एवं भावनात्मक संतुष्टि जैसे दोनों ही प्रकार के सुख का आनंद प्राप्त होगा। जातकों को चाहिए कि वे इस ऊर्जा का उपयोग अपने लिए अनुकूल स्थिति तैयार करने में करें और इन अवसरों का लाभ अधिक से अधिक उठाएं।

सूर्य (09 December, 2025 - 27 December, 2025)

सूर्य आपकी वार्षिक कुंडली में मध्यम शक्ति का है और आपकी जन्म कुंडली में मध्यम स्थिति में है। दोनों चार्ट में सूर्य की संयुक्त शक्ति इसकी दशा के दौरान मिश्रित प्रभाव दर्शाती है।

वर्षफल में सूर्य की महादशा व्यक्ति की मूल पहचान, अधिकारियों से संबंध, प्रेरणा और सहनशक्ति पर केंद्रित समय को दर्शाती है। यह धैर्य, साहस और पहचान से जुड़े अनुभवों को प्रभावित करती है।

सूर्य की दशा जब मध्यम बल वाली हो तो ऐसी स्थिति के दौरान संबंधित जातकों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यह स्थिति जातक के जीवन से संबंधित सकारात्मक प्रभावों को सीमित कर सकती है। हालांकि, स्थानीय स्तर पर जातकों को पहचान प्राप्त करने में सफलता मिल सकती है लेकिन उसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। इस समय के दौरान जातकों को उनके कार्यस्थल पर संघर्ष और विरोध का सामना करना पड़ सकता है। जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली पित्त की बीमारियों की भी संभावना गोचर होती है। जातक को इन कठिनाइयों से निपटने के लिए और अपने जीवन शैली को स्वस्थ बनाए रखने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही स्वास्थ्य संबंधी नियमित जांच करवाने की भी आवश्यकता है। जातकों को चाहिए कि, वे सामुदायिक सेवा से जुड़े कार्यों में शामिल हों। इससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सकती है और लोगों के साथ उनका संपर्क भी बढ़ सकता है। कार्यस्थल पर जातकों को अपना धैर्य बनाकर रखने की जरूरत है जिससे समस्याओं का समाधान करने में सहयोग मिलेगा। जातक अपने आध्यात्मिक विश्वास को अपने जीवन में शामिल करें इससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधित बीमारियों से राहत मिल सकती है।

चंद्र (27 December, 2025 - 27 January, 2026)

चंद्र आपकी वार्षिक कुंडली में मध्यम शक्ति का है और आपकी जन्म कुंडली में बलवान स्थिति में है। दोनों चार्ट में चंद्र की संयुक्त शक्ति इसकी दशा के दौरान सकारात्मक प्रभाव दर्शाती है।

वर्षफल में चंद्रमा की महादशा व्यक्ति की माँ, मानसिक स्थिति, भावनात्मक संतुष्टि और सौंदर्यबोध के प्रभाव पर जोर देती है। यह सुंदरता, पोषण गुणों और भौतिक सुखों पर ध्यान केंद्रित करती है।

मध्यम शक्ति वाले चंद्रमा की दशा के दौरान जातकों के जीवन में समृद्धि के मध्यम अवसर प्राप्त हो सकते हैं। जातकों को मित्रों की तरफ से कुछ आराम प्राप्त हो सकता है और व्यापार में लाभ प्राप्त हो सकता है। इस समय के दौरान यदि कोई जातक कन्या संतान प्राप्ति की इच्छा रखता है तो कन्या की प्राप्ति जीवन में खुशी ला सकती है और धार्मिक कार्यों को बढ़ा सकता है। हालांकि, इस समयावधि में कुछ चुनौतियों की भी संभावना है। जैसे जातक को धन की हानि झेलनी पड़ सकती है। उसका अपने प्रिय जनों से किसी तरह का विरोध हो सकता है। स्वास्थ्य में उसे कफ से संबंधित कोई बीमारी हो सकती है। जातक को बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता को बनाए रखना चाहिए और सावधानी बरतनी चाहिए। इस अवधि के सकारात्मक पक्षों में जातकों को व्यापार या रोजगार कार्य में समृद्धि मिल सकती है। उसके मित्रों में भी वृद्धि हो सकती है। जातकों का आध्यात्मिक विश्वास बढ़ सकता है जिससे उसे खुशी प्राप्त हो सकती है। ये स्थितियां जातक के जीवन में एक संतुलित और संतुष्टि प्रदान करने वाले अनुभवों का निर्माण कर सकती हैं।



Disclaimer: All astrological calculations are based on vedic rules & scientific equations and not on any published almanac. Though all efforts have been made to ensure the accuracy of all published reports and calculations, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. Therefore, prokerala cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report. prokerala assumes no liability for any decisions made based on output from our calculations or reports. The reports or remedies should not be used as substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as a financial or legal advisor, doctor, psychiatrist etc. Information, forecasts, predictions, reports and remedies provided by prokerala should be taken strictly as guidelines and suggestions.

Prokerala.

www.prokerala.com

1800 425 0053

support@prokerala.com

